ओम् शान्ति 16-3-13 मधुबन

प्यारे बापदादा की अति लाडली, हम सबकी अति प्रिय, अपने सूरत वा नयनों से ब्रह्मा बाप की झलक दिखाने वाली, ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका, पूर्वी क्षेत्रों की मुख्य संचालिका, दीदी निर्मलशान्ता जी ने 15 मार्च 2013 शुक्रवार को ब्रह्ममहूर्त में 2 बजकर 45 मिनट पर अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। उनके पार्थिव शरीर को अहमदाबाद से शान्तिवन तथा ज्ञान सरोवर की परिक्रमा दिलाते हुए, 2 बजे, सभी के दर्शन अर्थ पाण्डव भवन के हिस्ट्री हॉल में रखा गया। देश विदेश के हजारों भाई बहिनें दादी जी को अपने स्नेह सुमन अर्पित करने आते रहे। पूरी रात अखण्ड योग भी चलता रहा। 16 मार्च को सवेरे 10 बजे उनके पार्थिव शरीर का फूल मालाओं से श्रृंगार कर मधुबन के चारों धामों की यात्रा तथा आबू की परिक्रमा कराते हुए 11.30 बजे अन्तिम संस्कार किया गया। उनके रथ को बहुत सुन्दर फूल मालाओं से सजाया गया था, आबू के नागरिक भी बीच-बीच में फूल मालाओं से अपनी स्नेह श्रृद्धांजलि देते रहे। इस अवसर पर ईस्टर्न ज़ोन की मुख्य टीचर्स बहिनें एवं भाई, सभी ज़ोन इन्चार्जेज बहिनें, तीनों दादियां, तीनों बड़े भाई तथा देश विदेश के करीब दो अढ़ाई हजार भाई बहिनें इस अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुए। अन्तिम संस्कार के पश्चात दोपहर 1.30 बजे ओम् शान्ति भवन में दादी गुल्जार जी ने विशेष वतन में बापदादा को भोग लगाया। वतन का दिव्य सन्देश इस प्रकार है:-

ओम् शान्ति 16-3-13 मधुबन

दादी निर्मलशान्ता जी के प्रति भोग तथा वतन का सन्देश (गुल्जार दादी)

आज जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो हमारे सामने बाबा आ गये। ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे बाबा के नयनों में एकदम प्यार का सागर है। कुछ समय के बाद मुस्कराते हुए बाबा ने कहा आओ बच्ची, तुमको एक दृश्य दिखाते हैं। तो बाबा अपने साकार वतन के कमरे में लेकर गये वहाँ जाकर मैंने देखा कि दादी निर्मलशान्ता बाबा की गद्दी पर आराम से फरिश्ते रूप में बैठी हैं, जो बहुत सुन्दर लग रही थी। मैं देखकर बड़ी खुश हो रही थी। तो बाबा ने कहा बच्ची अपनी तबियत से बहुत थक गई थी और सभी के प्यार ने भी इसको थका दिया था क्योंकि सब इसको बड़े प्यार से देखते थे, इसको देखते सबको ब्रह्मा बाबा की याद बहुत आती थी। ब्रह्मा बाबा की शक्ल के नैन चैन इसके चेहरे में दिखाई देते थे। तो बाबा ने कहा कि बच्ची बड़ी थक गई थी इसलिए मैंने फरिश्ता बनाके देखो इसको बिठा दिया है। तो फरिश्ते रूप से वह हमसे मिली और उसकी आंखों में जैसे इस दैवी परिवार का बहुत-बहुत प्यार अनुभव हो रहा था। फिर बाबा मेरे साथ ही थे, तो जैसे ही बाबा को देखा तो बाबा की गोदी में समा गई। बाबा ने कहा इसको थकावट बहुत है ना इसलिए यह ऐसे समा गई है। जैसे छोटा बच्चा एकदम चिपक जाता है, ऐसे वह बाबा के साथ ऐसे चिपक गई जैसे बाबा और वह एक हो गये। थोड़े टाइम के बाद बाबा ने मुझे देखा और कहा बच्ची, आज आप किसकी याद लाई हो?

मैंने कहा बाबा सभी की याद लाई हूँ, ईस्टर्न ज़ोन के भी बहुत से भाई बहिनें आये हैं और जिसकी सेवा का टर्न है, वह भी आये हैं, साकार वतन में तो बहुत बड़ा मेला लगा है। तो बाबा ने कहा बाबा भी हर बच्चे की यादप्यार स्वीकार कर रहे हैं। हर एक बच्चा अभी वर्तमान समय एक ही श्रेष्ठ संकल्प में है, मैने कहा बाबा वह कौन सा संकल्प? बाबा ने कहा मैजॉरिटी हर एक बच्चे को यह संकल्प है कि बाबा ने इतना जो हम लोगों को प्यार दिया है, पालना दी है, इतने खजाने दिये हैं, उसका रिटर्न अब बाबा को दिखाना ही है। तो बाबा ने सभा को इमर्ज किया, यहाँ तो थोड़े बैठे हैं लेकिन वहाँ बहुत बड़ी सभा थी, तो सभा को इमर्ज करते कहा कि मैजॉरिटी के मन में अब यही संकल्प है कि मुझे ब्रह्मा बाबा के समान बनकर ही दिखाना है। तो बाबा सभा को देखकर खुश हो रहा था और सबके दिल

का संकल्प बाबा तक पहुंच रहा था। बाबा एक एक बच्चे को दृष्टि देते बच्चों के संकल्प को कैच कर रहा था और बहुत मुस्करा रहा था। फिर बाबा ने जो इस ज़ोन की हेड्स हैं, उन्हों को इमर्ज किया और बहुत बहुत मीठी दृष्टि दी। फिर यह जो सेवाधारी हैं (रूकमणी बहन तथा उनके साथी) इनको आगे किया, और इनको (रूकमणि बहन को) एकदम जैसे गोदी में समा दिया। यह भी ऐसे हो गई जैसे एकदम छोटा बच्चा चिपक जाता है, ऐसे यह बाबा की गोदी में समा गई। बाबा ने कहा बच्ची ने बहुत अच्छी दिल से सेवा की है और बच्ची के मन में सदा यही है कि बाबा को कुछ करके दिखाना है। इनके संकल्प बहुत शुद्ध हैं, फालतू नहीं हैं इसलिए बाबा ने इसको सन्देशी का पार्ट भी दिया है। और दूसरी जो ज़ोन की हेड्स थी, उनको बहुत अच्छी दृष्टि देते बाबा ने कहा, अभी इस ज़ोन का कुछ विचित्र पार्ट देखना है। बाबा एक एक को ऐसे हाथ में लेते मिलन मना रहे थे। बाबा ने कहा अभी इस ज़ोन को कमाल करके, कोई नवीनता करके दिखानी है। तो सभी बहुत प्यार की गोदी में जैसे समाये हुए थे। फिर बाबा ने पूरी सभा को इमर्ज करके लाइन में एक एक को बहुत पॉवरफुल दृष्टि दी। जिसको बाबा दृष्टि देता था वह जैसे प्यार में और शक्ति रूप में खो जाता था। ऐसे बाबा एक एक के पास जाकर आज दृष्टि दे रहा था, यह दृश्य भी देखने लायक था। मैने देखा आज बाबा को बच्चों प्रति बहुत-बहुत प्यार आ रहा था। फिर बाबा ने कहा हर एक बच्चा बाबा की उम्मीदों का तारा है। (ईस्टर्न ज़ोन की टीचर्स को तथा पाण्डवों को दादी ने सभा के बीच खड़ा किया और कहा कि) पाण्डव भी कम नहीं तो शक्तियां भी कम नहीं, अभी दोनों को कमाल करके दिखानी है। अभी ज़ोन से ऐसे समाचार आयेंगे।

फिर निर्मलशान्ता दादी सामने आई, मेरे को गद्दी पर बिठाया और कहा गुल्जार तुम आई हो! मैंने कहा देखो आपके लिए कितने भाई बहिनें आये हैं। आपके ज़ोन के सब मुख्य मुख्य आ गये हैं। तो बाबा ने दादी को सभी ज़ोन के भाई बहिनों के आगे खड़ा किया, दादी भी बहुत मुस्कराके एक एक को दृष्टि दे रही थी। बाबा ने निर्मलशान्ता को कहा कि अभी देखना यह ज़ोन कमाल करेगा फिर तुमको इमर्ज करके सुनायेंगे कि इन्होंने क्या-क्या किया! तो वह भी खुश हो रही थी।

बाबा ने कहा कि जैसे इसने शुरू से लेके विशेष सेवा की है। बाबा ने बच्ची के लिए एकस्ट्रा कुछ नहीं किया, लेकिन बच्ची ने एकस्ट्रा करके दिखाया। इस बच्ची ने जो त्याग किया, शादी की हुई थी, बच्ची भी थी, लेकिन जो त्याग किया, वह त्याग बहुत अच्छा किया। त्याग माना त्याग, फिर जरा भी वृत्ति नहीं गई। बच्ची पर बाबा खुश है। बच्ची ने कोई भी ऐसी खिटखिट वाली बात जीवन में नहीं लाई। बहुत लाड-प्यार से चली और लाड-प्यार से अपनी सेवा करके बाबा के पास आ गई। अभी इसका क्या पार्ट चलता है वह पीछे सुनाऊंगा। लेकिन बच्ची की रिजल्ट अच्छी है। बाबा खुश है। बच्ची भी खुश है। ऐसे करके बाबा ने उनको फिर से अपनी गोदी में समा दिया और मेरे को छुट्टी दी। मैं साकार वतन में आ गई। ओम् शान्ति।